

होरी पचीसी

लेखक

चौधरी श्रीयदुनाथ ठाकुर "यादव"

प्रकाशक

चौधरी श्रीकौशलकिशोर ठाकुर

सिंहवाड़ स्टेट,

पो०—सिंहवाड़, दरभंगा

होरी पचीसी

(राम-जानकीक पचीस गोट)

लेखक

चौधरी श्रीयदुनाथ ठाकुर "यादव"

वसन्त-पञ्चमी, संवत् २००६

दू कथा

उपस्थित अछि, हमर ई अभिनव कृति । 'होरी पचीसी' क प्रत्येक गीत भिन्न राग ताल में आबद्ध अछि । स्वर, ताल, राग एवं रागिणीक जिम्मा छैन्ह गायक समाजक । हमरा ओहिसँ कोन प्रयोजन ? हम त केवल अपन भाव कै छन्दोबद्ध कयल अछि । सन्तोष एतबे अछि जे होरी खेलयबाक स्थान अछि मिथिलाक पवित्र भूमि और खेलाइत छथि जगज्जननी जानकी एवं जगत्पिता राम । तखन गुण-दोषक विवेचने किएक ? राम-नाम चीनीक लड्डू थिक, टेढ़ो मधुर सोम्बो मधुर ।



यादव

होरी पचीसी

[१]

हट्ट छाट्ट कर सिय अति सुकुमरी रे ।

चूड़ी टूटि चुभि गेल, देखू धनुधारी रे ॥१॥

वलथ कगन टूटि, मोतीलर टुटलई ।

गारी पढ़त सभ, मिथिला क नारी रे ॥२॥

विनय विनती हरि, कान नहि धारथि ।

“यादव” चरण धरि, गेलौ हम हारी रे ॥३॥

[२]

खेलय जाथि रे कुमरि, रंग राम सँ लजित ।

संग शोभामयि सखिगण रत्न सजित ॥१॥

निरखथि जनक सुनयना निरखथि ।

निरखथि पुर के बजित वेवजित ॥२॥

शोभा सुभग सखीगण निरखथि ।

“यादव” ललित कलित आ चकित ॥३॥

(२)

[३]

झट अएलौं हैं दौड़ि ।
सुनि होरी के भनक ॥१॥

बोन मृदंग ढोल डफ वाजत ।
मन मोहय कठताला के ठनक ॥२॥

राम निरखि मनवाप शमित भेल ।
श्रुति सियपद सुनि मधुर भनक ॥३॥

धन "यादव" धन मातु सुनयना ।
धन मिथिलापति नृपति जनक ॥४॥

[४]

होरी खेलू कुमर मिथिला में सम्हरि ।
कोमल अति मिथिलेश कुमरि ॥१॥

पीताम्बर कटि पाँच टका केर ।
लाख हजारक लाल चुनरि ॥२॥

कहलहुँ देव नेह आँजुर भरि ।
कहि पुनि जाएव लाल मुकरि ॥३॥

"यादव" राम-सिया चरणक रज ।
पावि भुवन दुहु गेल सुधरि ॥४॥

(३)

[५]

कुंकुम चला कय मारल
रघुवरजी प्रिय सिया के ॥१॥

अजगुत ई प्रियतम कैलनि
सीता सुनरि रँगि देलनि ।
की कहिअनु सियक पिया के
रघुवरजी प्रिय सिया के ॥२॥

हम दशरथ-सुत के डटलहुँ
“यादव” लज्जित भय हँसलहुँ ।
अति शोभा जनक-धिया के
रघुवरजी प्रिय सिया के ॥३॥

[६]

गगरिया रे, ढारि देलथिन गगरिया ।
सुनरिया रे, भीजि गेलइ सुनरिया ॥१॥
प्रियतम रघुवर अति मन भावन ।
भगरिया रे, कोना करितहुँ भगरिया ॥२॥
“यादव” मुदित राम सिय खेलथि ।
नजरिया रे, लागि गेलइ नजरिया ॥३॥

(४)

[७]

राम सिया खेल करथि, जनकजीक आँगना ॥१॥
खन खन सर चाप वजत, मन मन मन कागना ।
रंग भरय भरहर भरहर, खेलथि दुहु फागना ॥२॥
समधी दशरथ सदेह, मिथिला के पति विदेह ।
सजनी मिथिलेश कुमरि, रवुकुलमणि साजना ॥३॥
“यादव” हरषित सुरेश, वर्षा पुष्पक अशेष ।
गान गन्धव करथि, किन्नर के वाजना ॥४॥

[८]

मं मं मिथिलेश-भवन खेलथि हरि-होरी ।
सं सं सं सिय सरोज अजव मिलल जोरी ॥१॥
रं रं रं रंग भरय गं गं गुलाल उड़य ।
नं नं सभ नृत्य करय मिथिला-किशोरी ॥२॥
जं जं जं जनक नृपति कं कं कोशल-भुपाल ।
यं यं “यादव” नेहाल विनवति करजोरी ॥३॥

(५)

[६]

खेलैलौ फगुआ खेला रहलि छी,
खेला खेला कए खेला रहलि छी ॥१॥

राम रघुवर सिय सुहागिनि,
सिनेह सरिता बहा रहलि छी ॥२॥

प्रमोद उपवन, वसंत प्रमदित,
उमंग अनुपम देखा रहलि छी ॥३॥

पूर्णमा-निशि, हँसथि निशिपति,
ज्योत्सना में नहा रहलि छी ॥४॥

राम-सिय-पद, मधुर “यादव”,
हृदय हँसि हँसि लगा रहलि छी ॥५॥

[१०]

मारे पिचकारी सिया, राम के वदन पर ॥१॥

रंग रतनारी हाथ कनक पीचकारी ।

कनक पुनरि मारय अपन सजन पर ॥२॥

राम सन वर दुलहिनि सिय सन नहि ।

“यादव” कहथि विधि दोसर रचल नहि ॥३॥

(६)

[११]

निरनु सखि राम सियाजोक जोरी ॥१॥
श्याम राम अभिराम मनोहर,
सिय सुन्दरि अति गोरी ॥२॥
अति वमंग आनन्द परस्पर,
हसि हसि खेलाथि होरी ॥३॥
“यादव” पुनि अवसर नहि पाएव,
नेह सरस करु चोरी ॥४॥

[१२]

के अएलइ अए कतए कहाँ सँ,
कोना खेलाएव होरी रे ॥१॥
ई घनश्याम सिया विधुवदनी,
कोना लगाएव जोरी रे ॥२॥
ई स्नातक मुनिवर कौशिक के,
ई मिथिजेश-किशोरी रे ॥३॥
“यादव” श्याम राम नहि मानथि,
खेलाथि जोराजोरी रे ॥४॥

(७)

[१३]

रचलनि राम सिय-मुख रंग ॥१॥

नारि नर मिथिलाक नाचथि,

सहित सरस डमंग ॥२॥

इन्द्र नाचथि शचिष नाचथि,

पारवति अरभंग ॥३॥

यक्ष नाचथि यक्षिनी लय,

रतिक संग अनंग ॥४॥

चल अचल भूगोल नाचथि,

प्रकृति पुरुषक संग ॥५॥

राम-सिय-पद हृदय "यादव",

राखु सवत अभंग ॥६॥

[१४]

सिय खेलथि फगुआ उमगि उमगि ॥१॥

सखिगण नाचथि कमकि कमकि ॥२॥

सुरगण "यादव" सुमन लुटावथि,

सुर-नारी गावथि, मुसकि मुसकि ॥३॥

(८)

[१५]

॥ रसिया ब्रज के ॥

नागिन लहरय केश, सियाजीक नागिन लहरय केश ॥
होरी खेलथि राम जानकी पावन मिथिला देश ॥१॥
जनकनृपति-तनया अलवेली, तन-दुति दमकय फूल चमेली ॥
मणिमय साजल वेश, सियाजीक नागिन लहरय केश ॥२॥
नाचथि चपला जकाँ सहेली, ज-कनृपति के हँसैव हवेली ॥
“यादव” मुदित आरोप, सियाजीक नागिन लहरय केश ॥३॥

[१६]

॥ हए की कहिअह बहिना ॥

जखन दुलारी आली मिथिलासुकुमारी हए की कहिअह बहिना ।
रघुवर गगर देल ढारि, हए को कहिअह बहिना ॥१॥
युवती सुहागिन नारी, हँसि ओंघरैली हए की कहिअह बहिना ।
हँसय लागलि सभ नारि, हए की कहिअह बहिना ॥२॥
गगन गगनपति हँसथि बिहुँसि हए की कहिअह बहिना ।
हिमगिरि हँसथि त्रिपुरारि, हए कहिअह बहिना ॥३॥
राम-सियाजी-पद अति मन भावय हए की कहिअह बहिना ।
“यादव” हृदय लेल धारि, हए की कहिअह बहिना ॥४॥

(६)

[१७]

॥ ब्रजक होरी ॥

मुनि कौणिक माला कथो लए जपथि ॥१॥

राम लखन संग भरत शत्रुहन
होरी खेलथि रंग ढारी ।

मुनि मटकथि हँसि भाव बतावथि

होरी सखि होरी मधुर मिथिला के कहथि ॥२॥

मुसकथि राम सिया घोंघटन तर
खिल खिताथि सभ नारी ।

कामिनि रसमयि राम रचावथि

होरी सखि होरी "यादव" चरण चखथि ॥३॥

[१८]

॥ होरी मदेशवाणी ॥

नहि खेलव गे माय सियाजीक फगुआ भेलइ बलाय ॥१॥

काल्हुक जनमल देल धकिआय

अपने चमकि कए गेली अगुआय ॥२॥

राम के अनूप रूप कहलो ने जाय

सिय के देखय लए मन अकुलाय ॥३॥

राममय अणु परमाणु ओ कहाय

"यादव" क मन बसु हुनक कहाय ॥४॥

(१०)

[१६]

॥ होरी डम्फक ॥

मिथिलापुर फागु मचय भूमकय ॥

नव जलधर घनश्याम रामतन

दामिनि-छवि सिय-तन चमकय ॥ मि० ॥१॥

श्याम तमाल रसाल रामतन

कनकलता सिय-तन लचकय ॥ मि० ॥२॥

“यादव” जगदाधार राम-सिय

पाप ताप निरखत घसकय ॥ मि० ॥३॥

[२०]

सिया सुन्दरि सँ खेलथि फाग, रघुवर नवे नवे ॥१॥

नव उमंग नव नागरि मुसुकथि, अतिशय नव अनुराग ।

रघुवर नवे नवे ॥२॥

नव भूषण नव वसन मनोहर, नव सरबस के त्याग ।

रघुवर नवे नवे ॥३॥

हमरो दिसि करुणाकर तकलनि, धन “यादव” के भाग ।

रघुवर नवे नवे ॥ ४॥

(११)

[२१]

होरी जनक-भवन में, खेलथि अवधकुमार ॥ १ ॥
लछुमन हाथ कनक घट रंगक, सिय-कर अविरक थार ॥ २ ॥
रघुवर-कर कनकक पिचकारी, ऋतुपति छलाह सकार ॥ ३ ॥
“यादव” युगल चरण-छवि निरखथि, मानव तन बलिहार ॥ ४ ॥

[२२]

✓ सखि कथनपि नहि खेलव रे, रघुपति संग फाग ॥
फाटि गेल पट आँचर रे, लागल तन दाग ॥ १ ॥
वरसय रंग अविर कर रे, नहि सूझय नैन ॥
मुख कुमकुम भरि देलनि रे, नहि निकसय वैन ॥ २ ॥
डाँटथि रघुवर “यादव” रे, कहि बहुविधि गारि ॥
खिल खिल हँसथि मुहा गिनि रे, तन-मन-धन वारि ॥ ३ ॥

[२३]

✓ रंग हम ढारब रघुवर सीता मुहागिनि संग ॥
रतन-भवन में बैसलि सीता
रघुपति ढारथि रंग ॥ १ ॥
रंग मरय जे चरण कमल सौं
से सिन्दूरक गंग ॥ २ ॥
गारि सुनाएब मातु कोशिल्या
पीबिकेहारि या भंग ॥ ३ ॥
“यादव” जीवन धन्य हैव जौं
भरि लेताह भरि अंग ॥ ४ ॥

(१२)

[२४]

महरि महरि मरि करय रंग
सिय खेलधि कगुआ राम संग ॥ १ ॥

लहरि लहरि लड़ि लड़ल नैन
कहि देलक नयना मनक बैन
चित चातक लेतइ कोना बैन
“यादव” जग में बैरी अनंग ॥ २ ॥

[२५]

आव फागुन सजनी कोना क चितव ॥ १ ॥

राम गेला सोतो लए गेजा

आव कोना रंग साढ़ी भिजंत ॥ २ ॥

राम सिया बिनु शून्य जनक-गृह

“यादव” आस मिलन के उदित ॥ ३ ॥



मिथिला रिसर्च सोसाइटी
लहेरियासराय, दरभंगा

देसिल बयना सब जन मिट्ठा
ते तैसन जम्पओ अवहट्ठा

(Mahakavi Vidyapati)

Mithila Research Society has undertaken initiative of digitization of rare and classical literary and research works in Maithili for readers and researchers. This is purely an attempt to preserve and popularize great works in Maithili for present and future generations to know their rich literary treasures. Art and literature shape a civilization. Mithila a cradle of learning has a glorious literary tradition right from Jyotirishwar Thakur and Mahakavi Vidyapati (medieval age) to Chanda Jha (pre independence era) to modern age represented by legends like Pandit Surendra Jha Suman and Pandit Chandranath Mishra Amar.

There is an exhaustive list of author, poet, playwright, critic and likes who chiseled Maithili literature into a great mosaic. Contribution of legends like Abhinav Vidyapati Bhavpritanand Ojha, Pandit Surendra Jha Suman, Kashikant Mishra Madhup, Kanchinath Jha 'Kiran', Ramcharitra Pandey 'Anu', Radhakrishna 'Baher', Yadunath Jha 'Yadugar', Chhedi Jha 'Madhup', Pulkit Laldas 'Madhur', Deenbandhu Jha, Janardan Jha 'Jansidan', Murlidhar Jha, Jeevan Jha, Kavivar Sitaram Jha, Upendranath Jha 'Vyas' Mahamahopadhyaya Umesh Mishra, Harinandan Thakur 'Saroj', Jagdishwari Prasad Ojha, Umapati Tiwari, Mahamahopadhyaya Madhusudan Ojha, Dr Sir Ganganath Jha, Mahamahopadhyaya Parmeshwar Jha, Mahamahopadhyaya Mukund Jha Bakshi, Ayodhyay Prasad Khatri, Nayayacharya Anand Jha, Umanath Jha, Tantranath Jha, Munshi Raghunandan Das, Ramdeo Srivastava, Sahdeo Srivastava, Bindeshwar Mandal, Jagdish Prasad Karna, Girindra Mohan Mishra, Brajnandan Thakur, Kalikumar Das, Subhadra Jha, Harimohan Jha, Babu Bholalal Das, Dinanath Pathak, 'Bandhu', Shailendra Mohan Jha, Babuaji Jha Ajnat, Ramanath Jha, Fazul Rahman Hashmi, Ishnath Jha, Mayanand Mishra,

Chandrabhanu Singh, RC Prasad Singh, Ramdeo Bhabuk, Dr Ramdeo Jha, Jaikant Mishra, Krishnakant Mishra, Pandit Chandranath Mishra Amar, Pandit Govind Jha, Dr. Ramdeo Jha, Ramkishore Jha 'Vibhakar', Dr Ratneshwar Mishra, Ravindranath Thakur, and other can't be forgotten. They dedicated their life to enrich Maithili literature with their outstanding literary creations. Many died unsung despite producing some of the best literary works and sadly they were forgotten. They selflessly devoted their life to serve Mithila and Maithili and bestowed upon us a rich heritage.

It was often felt that books in Maithili are not widely available despite huge demand by readers. Even outstanding literary works became rare due to lack of reprint.

Mithila Research Society is trying to bridge the gap by collecting and converting them in digital form. Mithila Research Society clarifies that this is purely a non-commercial undertaking hence any commercial use of the books is prohibited.

Mithila Research Society was established in 1905 by great poet Chanda Jha along with others. The organization was named as (Mithila Tatva Vimarshini (Mithila Research Society) to promote and preserve culture and literature of Mithila and Maithili besides promotion of teaching and learning of Sanskrit and Maithili, research and printing of popular texts of Mithila, research and publication of books related to history of Mithila

Pandit Chetnath Jha, Babu Keshi Mishra, Mahamahopadhyaya Mukund Jha Bakshi, Mahamahopadhyaya Pandit Gannath Jha, Munshi Raghunandan Das and Babu Tulapati Singh were on forefront along with Chanda Jha. Mahamahopadhyaya Parmeshwar Jha had written history of Mithila named as Mithila Tatva Vimarsha on request of Mithila Research Society. But the organization despite abundance of energy, dedication and hundreds of scholars deeply involved with the activity of the association could not flourish due to lack of desired support from society that was a huge loss for Mithila.

But the organization was revived around year 1965 by Dr Ramdeo Jha under guidance of his senior Shailendra Mohan Jha. So far by the mid of year 2018 Mithila Research Society published over 150 books of Maithili literature and regularly undertakes activities for promotion of Maithili. Dr Ramdeo Jha is heading this institution assisted by Shankardeo Jha.

Vijay Deo Jha

9470369195

8877213104

vijaydeojha@gmail.com